इकाई 14 : नगरीकरण - विकास, कारण एवं परिणाम; नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण (Urbanisation :Growth , Causes and Consequences; Functional Classification of Cities)

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 नगरीकरण

14.2.2 नगरीकरण से जुड़ी अवधारणाएँ

14.2.1.2 जनसांख्यिकीय तथ्य

14.2.1.2 समाज में संरचनात्मक परिवर्तन

14.2.1.3 नगरीकरण एक व्यावहारिक प्रक्रिया के रूप में

14.3 नगरीकरण का विकास

14.4 नगरीकरण के कारण

14.4.1 उद्योगों की स्थापना

14.4.2 कृषि में यंत्रीकरण

14.4.3 प्रशासनिक इकाइयों की स्थापना

14.4.4 परिवहन मार्ग

14.4.5 सांस्कृतिक केन्द्र

14.5 नगरीकरण के लाभकारी परिणाम

14.5.1 औद्योगिक प्रगति

14.5.2 यातायात के साधनों का विकास

14.5.3 कृषि व्यवसाय पर कम निर्भरता

14.5.4 शिक्षा की प्रगति

14.6 नगरीकरण के विनाशकारी परिणाम

14.6.1 स्थान की समस्या

14.6.2 आवासीय समस्या

14.6.3 परिवहन की समस्या

14.6.4 जलापूर्ति की समस्या

14.6.5 नगरीय प्रदूषण की समस्या

14.6.6 मल निकास तथा जल निकास समस्या

14.6.7 ईंधन तथा विद्युत आपूर्ति समस्या

Scanned with CamScanner

14.6.8 प्रशासनिक समस्या
14.6.9 नगरों में निर्धनता की समस्या
14.6.10 नैतिक व सामाजिक प्रभाव
14.7 नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण
14.7.1 नगरीय कार्य
14.8 नगरीय कार्यो के प्रकार
14.9 नगरों का वर्गीकरण
14.10 नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण की विधियाँ
14.10.1 गुणात्मक विधि
14.10.2 परिमाणात्मक विधियाँ
14.10. 2.1 हैरिस विधि
14.10. 2.1 नेल्सन की विधि
14.10. 2.3 वेब विधि
14.10.2.4 बहुचरीय विश्लेषण विधि
14.11 भारत में नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण
14.12 नगरों के कार्यात्मक समूह
14.12.1 उत्पादन केन्द्र
14.12.2 व्यापार व वाणिज्य केन्द्र
14.12.3 प्रशासनिक केन्द्र
14.12.4 सांस्कृतिक केन्द्र
14.12.5 परिवहन तथा संचार केन्द्र
14.12.6 पर्यटन व मनोरंजन केन्द्र
14.12.7 सैन्य अथवा सुरक्षा केन्द्र
14.12.8 मिश्रित नगर
14.13 सारांश
14.14 शब्दावली
14.15 संदर्भ ग्रंथ
14.16 बोध प्रश्नों के उत्तर
14.17 अभ्यासार्थ प्रश्न

14.0 उद्देश्य (Objectives)

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप समझ सकेगें कि : -

- नगरीकरण क्या है?
- नगरीकरण का विकास
- नगरीकरण के लाभकारी व विनाशकारी परिणाम

Scanned with CamScanner

- नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण

14.1 प्रस्तावना (Objective)

जनसंख्या जमाव के दो रूप होते हैं । प्रथम-नगर में जनसंख्या का जमाव जिले कस्बा, नगर, महानगर आदि कह सकते हैं तथा हरा ग्रामीण जमाव जिसमें पुरवा, नगला तथा गाँव आते हैं । मानव सभ्यता तथा संस्कृति से ज्ञात होता है कि पृथ्वी पर प्राचीन समय से ही दोनों रूप पाये जाते हैं । प्रारम्भ में सभ्य मानव ने ग्रामीण जीवन बिताना प्रारम्भ किया होगा फिर भी नगरों का इतिहास भी पुराना है; इसके प्रमाण सिंधु घाटी सीयता के नगर व बेवीलोन नगर में मिलते हैं । सही अर्थों में हमेशा से नगर ने ग्रामीण जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित किया है । इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों के नगरीय क्षेत्र में बदलने से बनी नगरीय जनसंख्या का इतिहास ही नगरीकरण है ।

14.2 नगरीकरण

14.2.1 नगरीकरण से जुड़ी अवधारणा

औद्योगिक एवं आर्थिक विकास का नगरीकरण से सीधा समानुपात सम्बन्ध है, अर्थात् जिस देश में औद्योगिक व आर्थिक विकास जितनी द्रुत गति से होता है, उस देश में उतनी ही द्रुत गति से नगरीकरण भी होता है । नगरीकरण से जुड़ी तीन अवधारणाएँ हैं -

14.2.1.1 जनसांख्यिकीय तथ्य (Demographic Facts)

14.2.1.2 समाज में संरचनात्मक परिवर्तन (Structural changes in the society)

14.2.1.3 नगरीकरण एक व्यावहारिक प्रक्रिया के रूप में (Urbanization in the form of behavioural Process)

जनसांख्यिकीय तथ्य के रूप में नगरीकरण को निर्धारित क्षेत्रों में कस्बों और नगरों की विशुद्ध और सापेक्षिक वृद्धि की एक प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है । इसे बहुधा दो स्तरों में प्रदर्शित किया जाता है - (1) जनसंख्या का बढ़ता हुआ भाग नगरीय स्थानों पर रहता है; (2) बड़े स्थानों पर रहने वालों के अनुपात में वृद्धि होती है । इस प्रकार बढ़ी हुई आबादी वाले बड़े स्थान को पूर्णत : नगरीकृत समाज के रूप में प्रदर्शित किया जाता है ।

पूँजीवादी औद्योगिक विकास के साथ-साथ जब नगरों में आबादी का घनत्व बढ़ा तो समाज में एक संरचनात्मक बदलाव भी आया । मशीनीकरण के युग में उत्पादों की वृद्धि हुई तो नगरों को विनिमय प्रतिक्रियाओं के केन्द्र के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा । आधुनिक अर्थव्यवस्था से लाभ उठाने के लिए कारखानों के मालिक पूँजीपति श्रमिक व व्यापारी सभी ने नगरों मे निवास करना अपने लिए श्रेयस्कर समझा । इस प्रकार हर वर्ग के लोग शहरों में रहने लगे अन्यथा' औद्योगीकरण के पूर्व श्रमिक वर्ग मुख्यत : देहातों में रहकर खेतिहर मजदूरों का कार्य करते थे। नगरीकरण से सम्बन्धित तीसरी संकल्पना यह है कि नगरीकरण एक प्रकार की व्यावहारिक प्रक्रिया है । बड़े नगरों को सामाजिक परिवर्तन के केन्द्र के रूप में भी देखा जाता है ।

Scanned with CamScanner

14.3 नगरीकरण का विकास (growth of Urbanization)

नगरीकरण विकास की प्रक्रिया अत्यन्त पुरानी है । नगरीकरण का उद्भव आज से लगभग 10, 000 वर्ष पूर्व प्रागैतिहासिक युग में हुआ था इस समय में मानव ने पौधों और पशुओं को घरेलू बनाना प्रारम्भ किया था । कृषि व उसके तरीके ने मानव को अर्थव्यवस्था में परिवर्तन करने, भोजन उत्पन्न करने और स्थायी निवास के लायक बना दिया । स्थायी अधिवासों का विकास मिस, मैसोपोटामिया, सिंधुघाटी, चीन तथा मध्य अमेरिका में हुआ था । इस प्रकार के उदाहरणों में कृषक समुदायों ने नगरीय समुदायों और नगरीय अधिवासों का विकास किया । मैसोपोटामिया (वर्तमान में ईराक) के उर (ur) इसका प्रमाण है । यह ई पू 1900 में केनन (cannon) की यात्रा से पूर्व अब्राहम के द्वारा बसाया अधिवास था ।

नगरीय बस्तियों के विकास के कारणों में पौधों का घरेलू बनाना, कृषक संग्रहण करने की अपेक्षा अधिक भोजन पैदा करने से जनसंख्या में वृद्धि सम्भव हुई । सिंचाई की कला, शक्ति, श्रम विभाजन समय की आवश्यकता थी जिससे सुसंगठित समाज का निर्माण संभव हुआ । जब कृषक अधिक अन्न उत्पादन करने लगे तो उनके पास न केवल अतिरिक्त भोजन था वरन् अतिरिक्त समय, शक्ति तथा श्रम और श्रम विभाजन की विविधता के लिए जन समूह आदि पूर्वापेक्षाएँ भी थी । समाज के कुछ सदस्यों को अन्नोत्पादन या कृषिकार्य से मुक्त रखा गया और प्रथम बार भूमि से विच्छेद किया गया । इस प्रकार अलग हुआ समुदाय अन्य समाजोपयोगी गैर कृषीय कार्यों में एक सुगठित समाज के रूप में लग गया और उन्हीं लोगों ने नगरों का विकास किया ।

मध्यकाल में कस्बों और नगरों का पुनर्निर्माण हुआ । 11वीं शताब्दी के बाद यूरोपीय देशों की समुद्रपार व्यापार में अधिक वृद्धि हुई । इस काल में व्यापारिक यात्राओं की भूमिका के साथ-साथ अधिकांश पश्चिमी यूरोप व्यापार से जुडे । कृषि क्षेत्र में अधिक सफलता प्राप्त हुई । नगरीय बस्तियों का आकस्किम विकास हुआ । 12 वी शताब्दी के अंत तक पेरिस नगर की आबादी एक लाख थी जो कि तेरहवीं शताब्दी के अंत तक बढ़ कर 2 ,40, 000 हो गई थी । जिनेवा, लंदन, वेनिस, मिलान उस समय के महत्वपूर्ण नगर थे । ये नगरीय केन्द्र स्थानीय बाजार नगर थे, जो बाजार व गिरजाघर पर स्थित थे ।

इसके बाद अनेक राजधानी नगरों का विकास हुआ । राजधानी में राष्ट्र के मुखिया का निवास होने से इस काल में अतिरिक्त धन तथा शक्ति का उपयोग विशाल राज प्रसादों के निर्माण में होने लगा । भारत में तो मध्यकाल के ऐतिहासिक भवन इसके उदाहरण हैं जैसे - ताजमहल, लाल किला, कुतुबमीनार जामा मस्जिद (दिल्ली) शाही मस्जिद (लाहौर) मुगल उद्यान इसी काल में निर्मित हुए थे

तालिका 14.1 : विश्व में नगरीकरण

वर्ष	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	
	+ 5000 जनसंख्या नगरों में	+ 2000 जनसंख्या के नगरों में
1800	3	2.4

Scanned with CamScanner

1850	6	4.3
1900	14	9.2
1950	30	20.9
1980	37	31.9
2000 अनुमानित	48	38.3

तालिका 14.2 विश्व में नगरीकरण की प्रवृति - 1960-80

प्रदेश	कुल जनसंख्या मेन नगरीकरण का प्रतिशत	
	1960	1980
अफ्रीका	18	28
उत्तरी अफ्रीका		43
पश्चिमी अफ्रीका		22
पूर्वी अफ्रीका		15
मध्य अफ्रीका		30
दक्षिण अफ्रीका		47
एशिया	21	23
दक्षिण पश्चिमी एशिया		52
दक्षिण एशिया		22
दक्षिण पूर्वी एशिया		23
पूर्वी एशिया		22
उत्तरी अमेरिका	70	74
लैटिन अमेरिका	49	63
मध्य अमेरिका		60
कैरिबियन		52
उष्ण कटिबंधीय द. अमेरिका		62
शीतोष्ण कटि. द. अमेरिका		82
यूरोप		69
उत्तरी यूरोप	58	74
पश्चिमी यूरोप		81
पूर्वी यूरोप		61
सोवियत संघ	49	62
ओसेनिया	64	72
विश्व	33	47

स्रोत : United Nations Dept of Economic and Social Affairs , N.Y

Scanned with CamScanner

तालिका - 14. 2 में विश्व के महाद्वीपों में 1960 से 1982 के आकड़ों के आधार पर नगरीकरण का प्रतिशत दिखाया गया है । इससे उ. अमेरिका, यूरोप ओसेनिया के अधिक नगरीकरण का पता चल रहा है ।

यूरोप में, जहाँ आधुनिक आर्थिक क्रांति का जन्म व विकास हुआ, नगरों का विस्तार 19 वीं शताब्दी के आरम्भ से ही तेज रहा । सन् 1900 तक इंग्लैण्ड, वेल्स तथा जर्मनी में अधिकांश जनसंख्या नगरीय थी । फ्रांस और स्वीडन सहित यूरोप के शेष देशों में 50 प्रतिशत से कम जनसंख्या नगरीय थी ।

उत्तरी अमेरिका व आस्ट्रेलिया में जहाँ 19 वी शताब्दी तथा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यूरोप से बहुत अधिक लोग आये, नगरीकरण विलम्ब से अवश्य हुआ, लेकिन इसकी गति तीव्र रही । जैसा कि तालिका- 1 से स्पष्ट हैं । यह क्रिया यूरोप की अपेक्षा अधिक तीव्र थी । आस्ट्रेलिया में 100, 000 से अधिक आबादी वाले नगरों में 1900 से 1950 के मध्य चार गुना आबादी में वृद्धि हुई जबकि यूरोप में यह वृद्धि दो गुनी ही रही । संयुक्त राज्य अमेरिका 1910- 1920 के दशक में ही नगरीय बना ।

एशिया के अधिकतर देशों में नगरीकरण 50 प्रतिशत से कम है । भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 75 प्रतिशत भाग अभी भी ग्रामीण है । प. यूरोप के नगरों की विशेषताऐं (औद्योगिक व व्यापारिक) भारतीय नगरों में नहीं रही । भारत के नगरों की विशिष्टता स्पष्ट नहीं हैं जैसा कि प. यूरोप के नगरों में पाई जाती है । यहाँ ग्रामीण और नगरीय विशिष्टताएँ एक साथ दिखाई देती है । बहुत से नगरों और कस्बों के निवासी अभी भी कृषि कार्य में संलग्न हैं । कुरूक्षेत्र रोहतक (हरियाणा) हापुड़ मुजफ्फर नगर (उ प्र) मुंगेर (बिहार) न्यूबागई गाव, कोकराझार (आसाम) नगरों की जनसंख्या का 10 प्रतिशत कृषि में संलग्न है ।

यूरोप आस्ट्रेलिया न्यूजीलैण्ड, जापान, सिंगापुर, हांगकांग, द.कोरिया के देश अधिक नगरीकृत हैं । चीन की' 52 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है । अफ्रीका एशियाई तथा लेटिन अमेरिका शेष देशों की जनसंख्या का 50 प्रतिशत से कम नगरीय है । हम कह सकते है कि उष्ण प्रदेशों की अपेक्षा शीतोष्ण अक्षांशों के देशों का नगरीकरण अधिक हुआ है । विकासशील देशों में नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत में तेजी से वृद्धि हो रही हैं । विगत कुछ वर्षो में विकासशील देशों में नगरीकरण की गति तीव्र हुई है । यह आश्चर्य की बात नहीं कि विश्व के अधिक विकसित क्षेत्रों की तुलना में कम विकसित क्षेत्रों के नगरीय क्षेत्रों में अधिक व्यक्ति निवास करते हैं ।

भारत उन देशों में से एक है जिनमें नगरीकरण बहुत पहले प्रारम्भ हो गया था । इसकी शुरूआत भारत में 3000 ई .पू में ही हो गयी थी । मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के नगरीय केन्द्रों को भारत में प्रागैतिहासिक नगरीकरण के उदाहरण के रूप में जाना जाता हैं । भारतीय इतिहास के प्राचीन और मध्य युगीन युग में कस्बों और नगरों का विकास मुख्यत : सामाजिक- आर्थिक भौगोलिक -राजनैतिक और सांस्कृतिक कारणों से हुआ ।

अंग्रेजों के आने के कारण बहुत से नगरों व कस्बों के विकास को बढ़ावा मिला । ब्रिटिश काल में कुछ नगर औद्योगिक केन्द्रों रूप में विकसित हो गये थे । उन्होंने भारत से कच्चे माल को निर्यात करने तथा ब्रिटेन में निर्मित माल तथा उत्पादित वस्तुओं को भारत व विस्तृत बाजार में

Scanned with CamScanner

बेचने के लिए व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की । ब्रिटेन ने भारत को अपना सुदृढ़ उपनिवेश बनाने के उद्देश्य से देश के सामरिक महत्व के स्थानों पर सैनिक छावनियाँ भी स्थापित की । अम्बाला, अहमदाबाद, आगरा, झाँसी, शिमला, मसूरी, मेरठ, रुड़की, महू (मध्यप्रदेश) तथा जालन्धर की वृद्धि और विकास इसका उदाहरण है ।

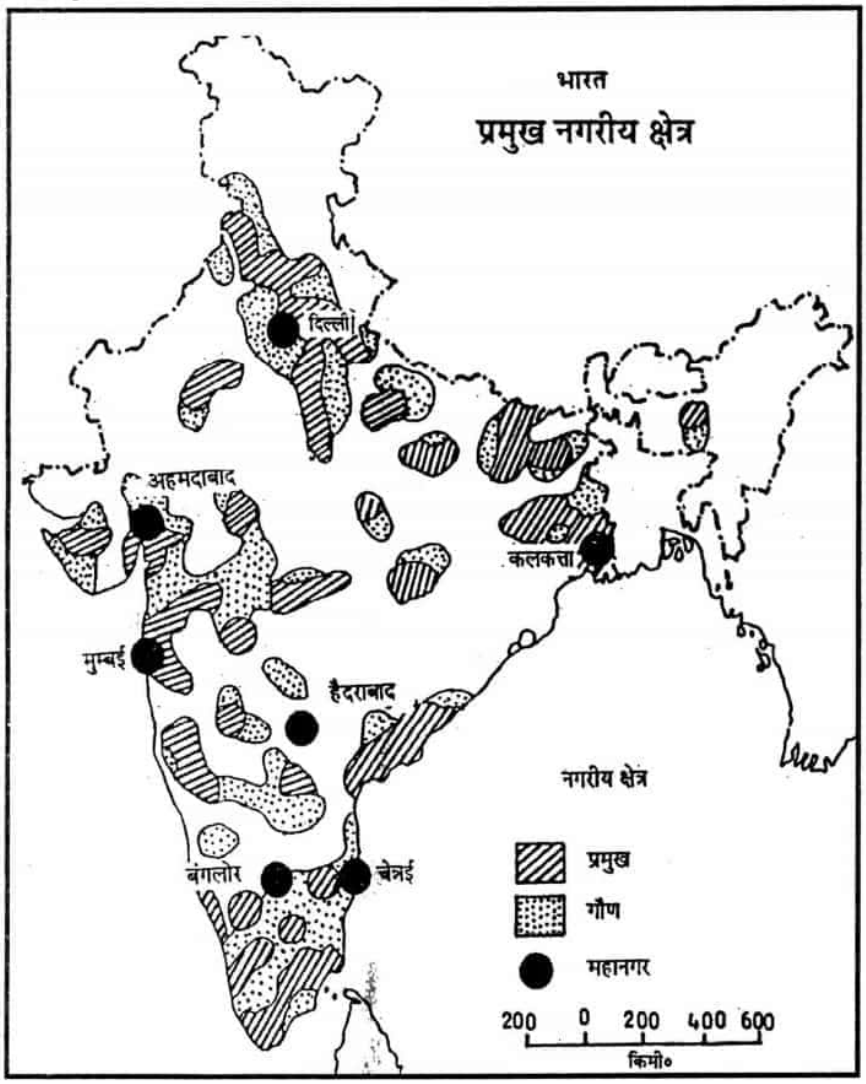

14.1: भारत के प्रमुख नगरीय क्षेत्र

यद्यपि सन् 1921 के बाद हमारे देश मे नगरीकरण प्रक्रिया की वृद्धि बहुत धीमी रही है, किन्तु सर 1947 में स्वतन्त्रता के बाद इसमें वृद्धि हुई । पिछले 60 वर्षों में न केवल पुराने नगरों और कस्बों की जनसंख्या आकार, घनत्व और क्षेत्रफल में विस्तार हुआ है बल्कि सैकड़ों नये नगर भी बसाये और विकसित किए गये हैं । चण्डीगढ़, पंचकुल, कांगजनगर, यमुनानगर, ईटानगर, मोंकाक चुंग विराटनगर, नोएडा , न्यूबोगाई गाँव ,आदि नगर नये विकसित नगरों के कुछ उदाहरण हैं ।

Scanned with CamScanner

तालिका-14.3 से स्पष्ट है कि वर्ष 1961-2001 के दौरान नगरीकरण सर्वाधिक महाराष्ट्र मे हुआ। इसके बाद उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, प बंगाल, गुजरात का स्थान है ।

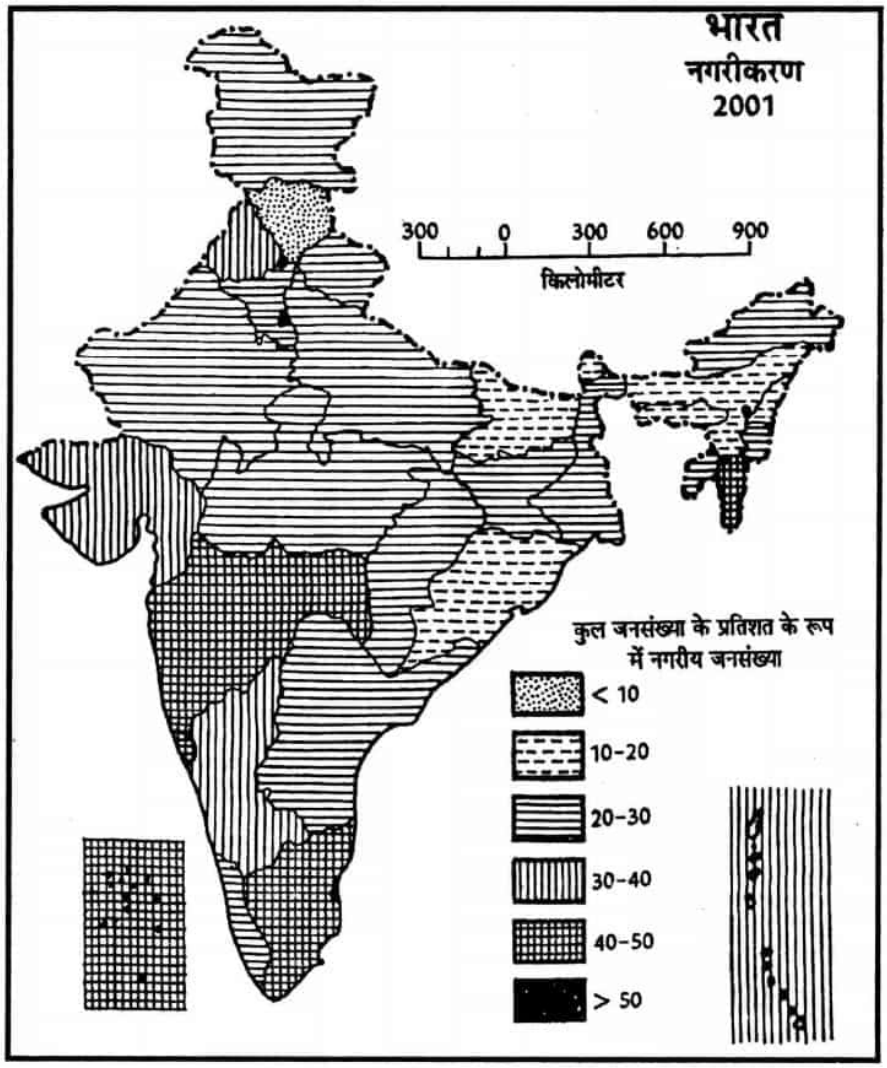

मानचित्र-14.2 : भारत में नगरीकरण 2001

तालिका-14.3 : भारत में नगरीकरण की प्रगति , 1961-2001

भारत/ राज्य	नगरीय जनसंख्या (लाखों में)				नगरीकरण प्रतिशत		अन्तर 1961-2001
	1961	2001	वृद्धि	%	1961	2001	
भारत	789	2845	2065	262	18.30	27.78	9.48
आन्ध्र प्रदेश	63	205	142	225	17.44	27.08	9.64
असम	8	34	26	325	7.37	12.72	5.35
अरुणाचल प्रदेश		2				20.41	

Scanned with CamScanner

बिहार	39	87	48	123	8.42	10.47	2.05
छत्तीसगढ़		42				20.08	
गोवा		7				49.77	
गुजरात	53	189	136	257	25.77	37.35	11.58
हरियाणा	13	61	48	369	17.23	29.00	11.77
हिमांचल प्रदेश	2	6	4	200	6.34	9.79	3.45
जम्मू-कश्मीर	6	25	19	317	16.66	24.88	8.22
झारखण्ड		60				22.25	
कर्नाटक	53	179	126	238	22.33	33.98	11.65
केरल	25	83	58	232	15.11	25.97	10.86
मध्य प्रदेश	46	161	115	250	14.29	26.67	12.38
महाराष्ट्र	112	410	298	266	28.22	42.20	14.18
मणिपुर	0.7	5.7	5	714	8.69	23.88	15.20
मेघालय	1	4.5	3.5	350	13.31	19.63	6.32
मिजोरम		4				49.50	
नागालैण्ड	0.2	3.5	3.3	16.50	5.19	17.74	12.55
उड़ीसा	11	55	44	400	6.32	14.97	8.65
पंजाब	25.7	82	56.3	219	23.06	33.95	10.89
राजस्थान	33	132	99	300	16.28	23.38	7.10
सिक्किम		0.6			4.22	11.10	6.88
तमिलनाडू	90	272	182	202	26.69	43.86	17.17
त्रिपुरा	1	5	4	400	9.02	17.02	8.00
उत्तर प्रदेश	95	345	250	263	12.85	20.78	7.93
उत्तरांचल		22				25.59	
प. बंगाल	85	225	140	165	24.45	28.03	3.58
दिल्ली	23.6	128	104.4	442		93.01	
दमन दीव	0.6				36.26		
अंडमान निकोबार	0.1	1.2	1.1	1100		32.67	
चंडीगढ़	1	8	7	700		89.78	
पांडिचेरी	0.9	6.5	5.6	622		66.57	
लक्षद्वीप		0.3				44.57	

Scanned with CamScanner

दादरा-नागर हवेली		0.5				22.89	

स्रोत : Census of India 1961 and 2001

14.4 नगरीकरण के कारण

नगरीकरण वर्तमान युग में एक शक्तिशाली तत्व है जो ग्रामीण जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है । परिणाम स्वरूप बड़े-बड़े कस्बे नगर और महानगर बन गए है । नगरीकरण की इस प्रक्रिया के निम्न कारण हैं

14.4.1 उद्योगों की स्थापना

औद्योगिक क्रांति के पश्चात् उद्योगों की स्थापना होने लगी । ये उद्योग उन्हीं स्थानों पर स्थापित किए गए जहाँ भौगोलिक सुविधाएँ उपलब्ध थी जैसे कच्चे माल की प्राप्ति, निर्मित माल को बेचने के लिए बाजार, जल, परिवहन सुविधा व सरकारी नीति । इन औद्योगिक केन्द्रों पर श्रमिकों और वाणिज्य व्यवसाय करने वालों की आवश्यकता हुई और ग्रामीण क्षेत्रों से लोग इन केन्द्रों की ओर आकर्षित हुऐ । यही केन्द्र नगरों के रूप में बन गए । बम्बई नगर इसी कारण से भारत का प्रमुख नगर बन गया ।

14.2.2 कृषि में यन्त्रीकरण

औद्योगिक प्रगति के साथ -साथ कृषि क्षेत्र में भी आशानुकूल वृद्धि हुई है । यन्त्रीकरण के कारण मानवीय श्रम में कमी आयी है तथा उत्पादन में भी वृद्धि हुई है । यही कारण है कि शेष मानव रोजगार की तलाश में नगरों की ओर आकर्षित हुआ तथा वहाँ द्वितीय व तृतीय व्यवसाय करने लगा । परिणाम स्वरूप इन स्थानों पर जनसंख्या का जमाव होने लगा ।

14.4.3 प्रशासनिक इकाइयों की स्थापना

सुव्यवस्थित राजनीतिक प्रशासन के लिए प्रादेशिक क्षेत्रों में प्रशासनिक केन्द्र खोले जाते है जैसे भारत में तहसील, जिला, प्रांत आदि है जिन के प्रशासन का भार एक केन्द्रीय स्थान पर होता है । इन प्रशासन केन्द्रों पर जनसंख्या का जमाव होता रहता है । इसका प्रमुख कारण इन स्थानों पर नागरिक सुविधाएँ जैसे बिजली, पानी, परिवहन मार्ग, शिक्षा केन्द्र, अस्पताल आदि का होना है जिनसे मनुष्य जीवन सरल बन जाता हैं । दूसरे इन स्थानों पर सरकारी नौकरियां, गैर-सरकारी या अर्ध सरकारी व्यवसाय वाणिज्य सहायक उद्योग आदि प्राप्त करने की सुविधाएं रहती हैं इनमें मनुष्य कृषि उद्योग को छोड़ कर उच्च व्यवसायों में लग जाता है । व अधिक आसानी से धन अर्जित करता हैं । यही कारण है कि बडे प्रशासनिक केन्द्र अधिक जनसंख्या को आकर्षित करता हैं । उदाहरण के लिए दिल्ली, देश की राजधानी होने के कारण बड़ा प्रशासनिक नगर है, जबकि जयपुर राजस्थान की राजधानी है तो यहाँ जनसंख्या का जमाव दिल्ली की अपेक्षा कम है । अजमेर केवल स्व जिले का प्रशासनिक केन्द्र है और इसलिए यहाँ जनसंख्या जमाव जयपुर से भी कम है ।

Scanned with CamScanner

14.4.4 परिवहन मार्ग

मुख्य नगरों और कस्बों में यातायात के साधनों की बहुतायत होती है । सड़कें, बैलगाड़ी मार्ग, रेलमार्ग और समुद्रों के समीप जल यातायात मार्ग भी उपलब्ध होते हैं । उपरोक्त कारणों से ही कृषि क्षेत्रों की उपज तथा उद्योगों में निर्मित माल यहाँ आता है । यही नगर और कस्बे कृषि मण्डियाँ तथा वाणिज्य के केन्द्र बन जाते हैं ।

14.4.5 सांस्कृतिक केन्द्र

बड़े नगर सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र होते हैं अत: जनसंख्या इनकी ओर आकर्षित होती है । पेरिस, एमस्टरड़म, रोम आदि नगरों के विकास का एक कारण यह भी रहा कि ये संगीत, कला, नाटक शाला, शिक्षा के केन्द्र रहे है । इसी प्रकार का एक केन्द्र संयुक्त राज्य अमेरिका में लॉस एन्जलिस नगर है जहाँ फिल्म व्यवसाय अपने चरम पर है और यह देश का बडा नगर बन गया।

नगरीकरण के परिणाम

वर्तमान में नगरीकरण की प्रवृत्ति में भारत, पाकिस्तान इण्डोनेशिया, अफ्रीकन देशों ने प्रगति अवश्य की है लेकिन ये अमेरिका ग्रेट ब्रिटेन की भांति पूर्ण विकसित नहीं है । नगरीकरण के परिणाम वरदान स्वरूप भी हो सकते हैं तथा विनाशकारी भी । इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि नव विकसित देशों में औद्योगीकरण की प्रगति नगरीकरण के साथ-साथ होनी चाहिए अन्यथा परिणाम विनाशकारी होगें ।

14.5 नगरीकरण के लाभकारी परिणाम

14.5.1 औद्योगिक प्रगति

प्रत्येक स्थानीय नगर और कस्बे में स्थानीय कृषि व कच्चे माल की उपलब्धि पर आधारित उद्योगों की स्थापना होती हैं परिणामस्वरूप जीविकोपार्जन के साधनों का विकास होगा ।

14.5.2 यातायात के साधनों का विकास

नगरीकरण के साथ साथ यातायात के साधनों का तेजी से विकास होता है । नगर जनसंख्या के सघन केन्द्र होने के कारण खपत के केन्द्र होते हैं अत : निर्मित माल को बाजारों तक पहुँचाने तथा उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध करवाना यातायात के साधनों के द्वारा ही सम्भव है । संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी पूर्वी भाग में प्राकृतिक साधनों की पर्याप्त उपलब्धता तथा सघन यातायात के कारण औद्योगिक प्रगति हुई हैं अत: यहाँ जनघनत्व भी अधिक पाया जाता है ।

14.5.3 कृषि व्यवसाय पर कम निर्भरता

नारी क्षेत्रों के विकास से भारत जैसे कृषि प्रधान देशों को राहत मिल सकती है क्योंकि कृषि व्यवसाय पर बढ़ती निर्भरता नगरीकरण के कारण कम होने लगती है । सघन ग्रामीण आबादी के कारण भारत की कृषि भूमि पर जनसंख्या दबाव अत्यधिक है । इससे छुटकारा तभी पाया

Scanned with CamScanner

जा सकता है जब आबादी को शहरों की तरफ मोड़ा जाये, जहाँ उन्हें वाणिज्य, उद्योग, व प्रशासनिक सेवाएँ व व्यवसाय मिल सकते हैं ।

14.5.4 शिक्षा की प्रगति

नगरी क्षेत्रों में शिक्षा की समुचित सुविधा होने के कारण जनसंख्या के आकर्षण का केन्द्र । इन केन्द्रों पर शिक्षित लोगों का प्रतिशत अधिक होने के कारण तथा विज्ञान और तकनीकी ज्ञान प्राप्त होने से जनसंख्या का गुणात्मक पक्ष मजबूत होता है और देश की उन्नति होती है ।

14.6 नगरीकरण के विनाशकारी परिणाम

औद्योगिक तथा प्रौद्योगिक प्रगति के साथ-साथ नगरीकरण का दौर चल रहा है । यही कारण है कि नगरों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई है । इस दौड़ के परिणाम अच्छे होने की संभावना नहीं है क्योंकि आने वाले समय में विकासशील विश्व की लगभग एक -तिहाई जनसंख्या महानगरों में निवास करेगी । जिनका रहन-सहन का स्तर निम्न होगा और मलिन बस्तियों का विस्तार होगा । जिनमें जीवनोपयोगी सुविधाओं का नितान्त अभाव होता है । सही अर्थों मे इन मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की दुःख स्थिति और वेदना ग्रामीण क्षेत्रों के गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालो लोगों से भी खराब होती है, यह आने वाले समय के लिए चुनौती है । नगरीकरण के विनाशकारी परिणमों के दो रूपों में देखा जा सकता है -

1. नगर की प्रशासनिक सीमा के अन्तर्गत रहने वाले लोगों की समस्यायें
2. नगर के बाहरी क्षेत्र की समस्यायें जिनसे नगरीय उपान्त अथवा प्रभाव क्षेत्र के नागरिक प्रभावित होते है । नगर के अंदर की समस्या में स्थान अभाव, आवास समस्या, परिवहन की समस्या, जल समस्या तथा प्रदूषण की समस्या के साथ-साथ मलमूत्र त्यागने, विद्युत व ईंधन समस्या प्रमुख हैं ।

14.6.1 स्थान की समस्या

शहरीकरण के साथ-साथ आवास, उद्योग यातायात, वाणिज्य के लिए भूमि की माँग उत्तरोत्तर बढ़ती रहती है । इसका परिणाम यह होता है कि एक तरफ स्थान की समस्या उठ खडी होती हैं तो दूसरी तरफ भूमि के मूल्य बढने लगते हैं । गगनोन्मुखी इमारतों का निमार्ण नगरी घनत्व में बढोतरी व कमजोर आय वर्ग वाले नगर वासियों का सस्ती भूमि की ओर प्रवास, मलिन बस्तियों का निर्माण, भौतिक तथा सामाजिक पर्यावरण में गिरावट, कृषि भूमि में कमी, आदि प्रवृत्तियां अपना प्रभाव दिखाने लगती है इस नगर समस्या ग्रस्त हो जाते हैं । विश्व के लगभग सभी नगर इस प्रकार की समस्याओं से लड़ रहे हैं । महानगरों में तो इनका उग्र रूप देखा जा सकता

14.6.2 आवासीय समस्या

संसार के सभी वृहद नगरों में आवास की समस्या जटिल रूप धारण करती ही जा रही है । इसका प्रमुख कारण यह है कि जनसंख्या वृद्धि जिस गति से हो रही है उस गति से मकानों की संख्या में बढ़ोतरी नहीं हो रही हैं जैसे भारत में नगरों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रतिवर्ष

Scanned with CamScanner

करीब 17 लाख मकानों की कमी देखी गई है, इसमें प्रति परिवार का 30 से 50 प्रतिशत आमदनी का भाग व्यय हो रहा है । इसका परिणाम यह होता है कि जनसंख्या का एक बड़ा भाग फुटपाथ पर, मलिन नगरीकरण- विकास, कारण बस्तियों व झुग्गी-झोपड़ियों या एक -दो कमरों के मकान में नहने के लिए मजबूर है । इसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव होता है इन बातों का प्रभाव उनकी कार्यक्षमता पर पड़ता है । मलिन बस्तियों के कारण नगर नियोजकों को नियोजन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है तथा प्रशासकों के लिए भी यह एक गंभीर समस्या है । मलिन बस्तियाँ निम्न आय वर्ग के लोगों को कम किराये पर आवासीय सुविधायें प्रदान करती है । इन में गांव से नौकरी की तलाश में शहर आने वाले लोग छोटे व गंदे मकानों में रहते है । इन मलिन बस्तियों में दिल्ली की झुग्गी-झोपड़ी, मुम्बई झोपड़ पट्टी, चेन्नई का चेरीज, कोलकत्ता में बस्ती तथा कानपुर में अहाता मुख्य है ।

14.6.3 परिवहन की समस्या

नगर के आर्थिक विकास के लिए परिवहन आवश्यक है । नगर जितना बड़ा होगा उसका परिवहन तंत्र उतना ही विकसित तथा विस्तृत क्षेत्र में फैला होगा । उचित परिवहन व्यवस्था न होने पर नगर की आर्थिक उन्नति अवरुद्ध हो जाती है । नगर के विभिन्न भागों में जाने के लिए पैसा अधिक खर्च करना पड़ता है । साथ ही उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति में बाधा उत्पन्न हो जाती है । नगर को मिलने वाले खाद्य पदार्थों के लिए कच्चा माल और श्रमिकों का आवागमन, उद्यानों के उत्पादन बिक्री में कठिनाई आ जाती है खराब परिवहन व्यवस्था से पर्यावरण तो प्रदूषित होता ही है साथ ही साथ दुर्घटनाओं की संख्या अधिक हो जाती है । नवीन अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि कष्टप्रद तथा उबाऊ परिवहन साधनों से निवासियों कि मन : स्थिति, मानसिक तनाव और उसकी कार्यक्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है । नगरों में परिवहन समस्याओं में विशेष रूप से मार्गों की कमी उनका अनुपयुक्त होना, धीमा विकास, परिवहन के साधनों में कमी, उनका रख -रखाव इत्यादि हैं ।

भारत के अधिकांश नगरों विशेषरूप से कस्बों की सड़कें खराब स्थिति में हैं । वर्षा के समय में इनकी स्थिति अधिक खराब हो जाती है । न्यूयार्क, शिकांगो, टोकिया, लंदन, मास्को आदि विकसित विश्व के नगरों में सुरंगों में रेलवे, वृत्ताकार रेलवे जैसी नवीन व्यवस्था को अपनाया गया है । भारत में धन की कमी के कारण परिवहन का विकास नहीं हो पा रहा है ।

14.6.4 जलापूर्ति की समस्या

मानव जीवन में इसका विशेष महत्व है । जल की अशुद्धि व अपर्याप्तता मानव स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालती है । प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में होने का मुख्य कारण जल ही रहा है । शहरीकारण के कारण जल की खपत प्रति व्यक्ति अधिक हो गई है । धरातलीय जल के अधिक उपभोग के कारण विश्व के नगरों में दूरदराज के क्षेत्रों से जल की पूर्ति की जा रही है । लासऐंजिल्स में 235 किमी. दूर स्थित सियरा नेवादा से जलापूर्ति होती है । बंगलौर को जलापूर्ति 100 किमी. दूर कोवेरी नदी द्वारा होती है । चेन्नई का विकास तो जल अभाव के कारण ही बाधित हो गया है । नगर के लिए जलापूर्ति हेतु 'Water Express'

Scanned with CamScanner

रेलगाड़ी चल रही है । अधिक जनसंख्या की जलापूर्ति दिल्ली में यमुना नदी नहीं कर पा रही और एक यमुना नदी गंदे नाले में बदल चुकी है । पेयजल पूर्ति दिल्ली में हरियाणा से हो रही है । इस प्रकार शहरीकरण के कारण प्रादेशिक जल संसाधनों में असंतुलन पैदा हो जाता है ।

14.6.5 नगरीय प्रदूषण की समस्या

नगरीकरण के साथ-साथ प्रदूषण सबसे बड़ा खतरा बन गया है । इस पर नियंत्रण आवश्यक हो गया है अन्यथा सम्पूर्ण सभ्यता को खतरा उत्पन्न हो सकता हैं । प्रदूषण, नगरों में उद्योगों का केन्द्रीयकरण, तेल व डीजल से चलने वाले वाहनों की बढ़ती संख्या, नगरी जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि, नगरी जनसंख्या की अपभोगता वादी संस्कृति के विकास, पेड़ पौधों का विनाश, प्लास्टिक का बढ़ता प्रयोग व आरामतलब जीवन की कामना, जनसंख्या में पर्यावरण बोध का अभाव, सरकारी व गैर सरकारी प्रदूषण नियंत्रण का विफल होना शहरीकरण के दुष प्रभाव ही हैं । इस प्रदूषण के अंतर्गत वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण ठोस अपशिष्ट प्रदूषण मुख्य हैं जिसका नगर के लोगों के जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ता है ।

विश्व के विभिन्न नगरों में वाहनों की संख्या तीव्र गति से बढ़ रही है । इससे वायु प्रदूषण का खतरा बढ़ता ही जा रहा है । टोकियो में कारों से निकलने वाले धुएँ से बचने के लिए यातायात सिपाही को ऑक्सीजन मास्क पहनना आवश्यक है । न्यूयार्क शहर में होने वाले प्रदूषण का लगभग 6090 केवल मोटर वाहनों द्वारा होता है ।

भारत में अपेक्षाकृत वाहनों की संख्या कम है लेकिन प्रदूषण समस्या गंभीर है । इसका प्रमुख कारण यहाँ के वाहनों का पुराना होना तथा इनका रख रखाव सही नहीं होना मुख्य है । केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार वाहनों से मुम्बई में 584 टन धुआँ प्रतिदिन जबकि दिल्ली में 865 टन धुआं निकलता है ।

उद्योगों के केन्द्रीयकरण के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका का वायुमंडल अत्यधिक प्रदूषित हो चुका है । इसका अनुमान आप इस बात से लगा सकते हैं कि अपोलो 10 के अन्तरिक्ष यात्रियों ने हजारों कि मी. दूर से औद्योगिक क्षेत्र लॉस एन्जिलस के धुएँ के बादलों के कारण पहचान लिया था ।

14.6.6 मल निकास तथा जल निकास समस्या

नगरों मे अधिक जल उपभोग किया जाता है इससे काफी मात्रा में अपशिष्ट जल बच जाता है । इस जल का निकास नगर पालिकाओं के लिए एक समस्या हो गई है उचित निकास न होने के कारण यह जल खुले स्थानों में एकत्रित होकर मच्छर व मक्खियों का प्रजनन क्षेत्र बन जाता है । बड़ोदरा नगर का 10 % क्षेत्र जल भराव समस्या से प्रभावित है । इलाहबाद नगर का अल्लापुर आइ.सी. कॉलोनी, जार्जटाउन आदि क्षेत्र इस समस्या से प्रभावित हैं ।

14.6.7 ईधन तथा विद्युत आपूर्ति समस्या

नगरों को घरेलू व्यापारिक तथा औद्योगिक आवश्यकता के लिए पर्याप्त विद्युत नहीं मिल पाती है इसका प्रभाव नगरीय क्रियाओं और अर्थव्यवस्था पर पड़ने लगता है । भारत जैसे देश में

Scanned with CamScanner

विद्युत संकट दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है । अधिक नगरीय जनसंख्या, प्रदूषण, रोगीयों की बढती संख्या विद्युत आपूर्ति कम होने का प्रभाव अस्पतालों , दूरसंचार, पेयजल संयंत्रों पर पड़ता है घरेलू ईधन के रूप में प्रयोग आने वाली रसोई गैस शहरी क्षेत्रों में लम्बे इंतजार के बाद मिलपाती है । भारत में रसोई गैस लोकप्रिय होती जा रहा हैं तो उसकी कमी उपलब्धता में कठिनाई होती जा रही है । इस मुख्य कारण शहरीकरण ही है ।

14.6.8 प्रशासनिक समस्या

नगर पालिका के वित्तीय संसाधन बहुत सीमित होते हैं जिससे नगर का विकास नहीं हो पाता और राष्ट्रीय प्रशासन से सहायता लेनी पड़ती है । प्रशासनिक इकाइयाँ परस्पर सहयोगी न होकर एक दूसरे के काम-काज में बाधा उत्पन्न करती हैं और दोषारोपण करती रहती हैं । इसका प्रभाव नगरवासियों पर देखा जा सकता है । उदाहरण के लिए दिल्ली में MCD (दिल्ली म्युनिसिपल कारपोरेशन) DMR (दिल्ली महानगरीय प्रदेश) NCR (राष्ट्रीय राजधानी प्रदेश) DELHI STATE (दिल्ली राज्य) प्रशासनिक ईकाइयां हैं । कभी-कभी राजनीतिक कारणों से ये संस्थायें एक दूसरे का विरोध करती हैं । इससे नगरीय विकास कार्यो में व्यर्थ का विलम्ब होता है ।

14.6.9 नगरों में निर्धनता की समस्या

1977 - 78 के अनुमान के आधार पर ज्ञात होता है कि नगरीय जनसंख्या का 45. 2 % भाग गरीबी रेखा की सीमा से नीचे अपना जीवन निर्वहन करने को मजबूर है । यह भी स्पष्ट है कि वर्ष 1993 - 94 में यह प्रतिशत कम हुआ और 32. 4 % रह गया था । लेकिन जनसंख्या के संदर्भ में इसमें लगातार वृद्धि हुई है और आज देश की लगभग 80 मिलियन जनसंख्या अभावग्रस्त व निर्धनता में जीवनयापन कर रही है । नगरीय जनसंख्या में निर्धनता सर्वाधिक उड़ीसा राज्य में (42. 83 %) तथा इसके बाद क्रमश : मध्य प्रदेश (39. 44 %) महाराष्ट्र (26. 81 %) आन्ध्र प्रदेश (26. 63 %) है । नगरीय निर्धनता सबसे कम (5. 57 %) पंजाब राज्य में है । इसी तरह से कम नगरीकृत व न्यून प्रति व्यक्ति आय वाले राज्यों में निर्धनता अधिक देखी गई है, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश इसके अपबाद हैं । इन प्रदेशों में कम नगरीय करण के साथ-साथ निर्धनता भी कम है । दक्षिण भारतीय राज्यों में नगरीय निर्धनता अधिक पाई जाती है । भारत के सभी राज्यों में ग्रामीण निर्धनता की तीव्रता नगरों की अपेक्षा अधिक पाई जाती है ।

14.6.10 नैतिक व सामाजिक प्रभाव

नगरीयता अर्थप्रधान होती है तथा भौतिकता की दौड़ यहाँ देखने को मिलती है । अत : इस संस्कृति के लोग अधिक धन अर्जित करने की प्रवृत्ति तथा भौतिक सुख सुविधाओं का एकत्रित करने को ही परम उद्देश्य मानते हैं । इस प्रवृत्ति के कारण एक स्पर्धा का जन्म होता है इसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है क्योंकि ऐसे में जीवन यांत्रिक हो जाता है, अत्यधिक व्यस्तता, भाग दौड और तनाव पूर्ण जीवन के कारण सामाजिक मूल्य समाप्त होने लगते हैं । जैसे दया,

Scanned with CamScanner

परोपकार, दुख-सुख में सहभागिता, सामाजिक मेल मिलाप, स्वार्थी विलासपूर्ण जीवन व मानवीय गुण समाप्त होना आदि । पाश्चात्य जगत के नगरों में ये समस्याऐं तीव्रता से बढ़ रही है । बेरोजगारी तनाव पूर्ण जीवन के कारण अपराधों की संख्या बढ़ रही है । भारत में भी इसी प्रकार के नगरों का विकास हो रहा है ।

14.7 नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण (Functional Classification of Towns)

14.7.1 नगरों के कार्य

नगरीय कार्यों के द्वारा नगर का विकास संभव होता है । डिकिन्सन महोदय के अनुसार कार्य नगरीय जीवन की चालक शक्ति होते हैं, ये बड़े पैमाने पर उसके विकास और आकारिकी को प्रभावित करते है । नगर के कार्य मुख्य रूप से अप्राथमिक क्रियाएं से सम्बन्धित होते हैं जिनमें वस्तु निर्माण, व्यापार, परिवहन, संचार आदि मुख्य हैं, जिन्हें द्वितीयक व तृतीयक श्रेणी के अंतर्गत सम्मिलित किये जा सकते हैं, जैसे वस्तु निर्माण उद्योग, व्यापार, परिवहन, संचार साधन आदि मुख्य हैं । मात्र खनन कार्य ही एक ऐसा कार्य है । जो प्राथमिक व्यवसाय होते हुए भी नगरों के विकास में योगदान देता है । इन के अतिरिक्त नगर के कार्यों में निम्न कार्य सम्मिलित हैं- (1) व्यावसायिक- चिकित्सा, शिक्षा (2) व्यक्तिगत में मनोरंजन व होटल व्यवसाय (3) वित्तीय में बीमा, बैंक इत्यादि (4) सार्वजनिक प्रशासन में सैन्य सेवायें जैसे जल, सफाई, विद्युत सेवायें (6) सामाजिक तथा सांस्कृतिक सेवायें जैसे साहित्य, दर्शन, धर्म इत्यादि को सम्मिलित कर सकते हैं ।

14.8 नगरीय कार्यो के प्रकार

नगर के कार्यो को ब्रून्स रूप से तीन वर्गों में रखा जा सकता है - (1) आधरभूत कार्य तथा अनाधारभूत कार्य (2) केन्द्रीय तथा अकेन्द्रीय कार्य (3) केन्द्राभिमुखी व अपकेन्द्री कार्य ।

नगर का उसके प्रदेश के साथ गहरा आर्थिक सम्बन्ध पाया जाता है । नगर द्वारा ही नगर के बाहर रहने वाले निवासियों की आवश्यकताऐं पूर्ण की जाती है । नगर की सीमा से बाहर के लोग नगर से उत्पादित वस्तुऐं खरीदते है यह कार्य जितना भी अधिक होता है नगर की आय में वृद्धि होती हैं तथा नगर का विकास तीव्र होता हैं ।

अनाधारभूत क्रियाओं में उन वस्तुओं और सेवाओं को सम्मिलित किया जाता है जिनका उत्पादन नगर के अंदर होता हैं और उन्हें नगर के अंदर ही बेचा जाता है । इस प्रकार की क्रियाओं को माध्यमिक नगर सेवा कारक की भी संज्ञा दी जा सकती हैं ।

उपर्युक्त दोनों क्रियाओं के बीच के सम्बन्ध को अनाधारभूत अनुपात के नाम से जाना जाता है । इस अनुपात का उपयोग नगरों के वर्गीकरण में किया जा सकता है । इस अनुपात में समय के साथ परिवर्तन देखा जा सकता हैं ।

Scanned with CamScanner

14.9 नगरों का वर्गीकरण

नगरों का वर्गीकरण यद्यपि स्थिति, परिस्थितिकी, उनका आकार, आकारिकी, विकास नगरीकरण का स्तर, उद्भव, नगरों का समूहन के आधार पर किया जा सकता है, लेकिन क्षेत्रीय विकास तथा नगरीकरण- विकास, तथा नियोजन की दृष्टि से नगरों के कार्यों व सेवा केन्द्रों के रूप में वर्गीकरण का महत्व अधिक है । वास्तव में कार्य नगर का मूल हैं इनकी अनुपस्थिति में नगर की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि इन कार्यो का नगर के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक संरचना पर प्रभाव पड़ता हैं ।

नगरों का कार्य की दृष्टि से वर्गीकरण कठिन विषय है क्योंकि नगर एकल कार्यात्मक नहीं होकर बहु कार्यात्मक होते हैं । विभिन्न नगरों के कार्यो में तीव्रता व विशिष्टीकरण के अनुसार अंतर पाया जाता हैं । इसीलिए कोई एक सर्वमान्य वर्गीकरण विधि के अभाव में कठिन हो जाता है ।

14.10 कार्यात्मक वर्गीकरण की विधियाँ

नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण में काम आने वली विधियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है - (1) गुणात्मक विधि (2) परिमाणात्मक विधियाँ ।

14.10.1 गुणात्मक विधियों

इस दिशा में प्रथम प्रयास 1921 में अरुसों महोदय का रहा हैं । इन्होंने अनुभव के आधार पर नगरों को दो भागों में रखा पहला सक्रिय तथा दूसरा निष्क्रिय । बाद में इन्होंने मुख्य कार्यों के आधार पर सक्रिय नगरों का पुन : छ : :कार्यात्मक वर्गों में विभाजित किया । अरूसों ने नगरों को बहु कार्यिक बताते हुए प्राथमिक अथवा अधारभूत कार्यों के महत्व पर प्रकाश डाला है ।

समाजशास्त्री मैकेन्नी (अमेरिका) ने 1925 में वस्तुओं के उत्पादन तथा वितरण की अवस्था को आधार मानते हुए समुदायों को चार प्रकारों में विभक्त किया- (1) प्राथमिक सेवा समुदाय उदाहरणार्थ कृषि नगर प्राथमिक उत्पादन वाले ग्रामीण क्षेत्रों और महानगरीय केन्द्रों के बीच कड़ी के रूप में कार्य करते हैं । (2) व्यापारिक श्रेणी समुदाय जिसमें माल संग्रहण व उसके वितरण के केन्द्र के रूप में कार्य (3) औद्योगिकी समुदाय इसके अन्तर्गत पहले व दूसरे वर्ग का योग पाया जाता है । (4) सेवाओं का केन्द्र ।

इसी प्रकार जेम्स (1930) में अपने लेख में भारतीय नगरों के कुल 6 प्रकार बताये हैं । हाल (1934) ने जापान के नगरों को विकास के आधार पर चार भागों में रखा हैं ।

14.10.2 सांख्यिकीय विधियाँ

इसमें गणितीय व सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाता है । इनमें से कुछ विधियों इस प्रकार है -

Scanned with CamScanner

14.10.2.1 हैरिस की विधि

हैरिस की विधि (1943) एक अर्द्धसांख्यिकीय विधि है । इस विधि को हेरिस महोदय ने कार्यात्मक विश्लेषण की सांख्यिकीय विधि की संज्ञा दी है । यह विधि नगर में रहने वाले लोगों के व्यवसाय तथा रोजगार सम्बन्धी आँकड़ो पर आधारित है । हैरिस की इस विधि के अनुसार नगर में विकसित जिस व्यवसाय में लगे व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक होगी वह व्यवसाय नगर का सबसे मुख्य कार्य होगा व उस नगर को उसी कवि वर्ग में रखा जायेगा । हैरिस महोदय ने अनुभव का प्रयोग करते हुए प्रत्येक कार्य के विशिष्टीकरण के लिए भिन्न-भिन्न आधार प्रस्तावित किये हैं । इस वर्गीकरण में रोजगार तथा व्यवसाय के आकड़ों का प्रतिशत के आधार पर उपयोग किया गया है । इन आकड़ों को जनगणना से प्राप्त किया गया हैं ।

हैरिस महोदय ने वर्गीकरण में कुल 9 वर्ग तथा उनके लिए मापदण्ड प्रस्तुत किये है - (1) विनिर्माण केन्द्र (2) थोक व्यापार केन्द्र (3) फुटकर व्यापार केन्द्र (4) विभिन्न प्रकार के रोजगार केन्द्र (5) यातायात केन्द्र (6) खनन व्यवसाय केन्द्र (7) विश्वविद्यालय नगर (8) पर्यटन नगर केन्द्र (9) अन्य नगर व राजनीतिक नगर ।

हैरिस वर्गीकरण को कुछ विद्वानों ने अपनाया तो कुछ ने इसकी कड़ी आलोचना की । सर्वाधिक आलोचना आँकोड़ों के स्त्रोत तथा आधार मूल्यों के चयन को लेकर की गई है । इस वर्गीकरण से सिविल, सैनिक, व्यावसायिक, वित्तीय कार्यों में अंतर स्थापित करना बहुत कठिन कार्य है । हैरिस के इस वर्गीकरण को कुछ विद्वानों ने संशोधित भी किया है जिनमें नीडलर (1949), विक्टर (1954) और हार्ट (1955) जैसे विद्वानों का नाम प्रमुख है ।

14.10.2.2 नेल्सन की विधि

नेल्सन ने प्रामाणिक विचलन विधि (Standard Deviation Method) का प्रयोग अमेरिकी नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण के लिए किया । नेल्सन द्वारा प्रतिपादित विधिक्रमिक बिंदु इस प्रकार हैं -

1. जनगणना विभाग द्वारा दिये गये सेवा वर्गीकरण में से उपयुक्त वर्गों का चयन ।
2. नगर के विभिन्न कार्यों में लगे श्रमिकों का अलग-अलग प्रतिशत ज्ञात करना ।
3. प्रत्येक कार्य वर्ग के लिए औसत ज्ञात करना ।
4. ज्ञात औसत के आधार पर सभी कार्यों का अलग-अलग प्रमाणिक विचलन निकालना ।
5. कार्य के विशेषीकरण के आधार पर तीन वर्गों में विभाजन करना (i)mean + lSD(ii)mean + 2SD तथा (iii) mean + 3SDl
6. यदि कार्य किसी वर्ग में समाहित नहीं हो रहा है तो उसे विभिन्न कृत नगरों की श्रेणी में रखना ।

विधि के गुण तथा दोष

नेल्सन विधि में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रक्रिया सरल और वैज्ञानिक है क्योंकि इसके माध्यम से प्रत्येक सेवा वर्ग में से एक नगर में किसी कार्य की विशिष्टता को ज्ञात करना आसान है । इसी से उसका कार्यात्मक पदानुक्रम निश्चित किया जा सकता है । इनकी विधि सरल तथा

Scanned with CamScanner

वैज्ञानिक होते हुए भी विश्व के सभी नगरों के लिए उपयुक्त हो, आवश्यक नहीं है । एक तरफ प. देशों के लिए यह विधि उपयुक्त है क्योंकि वहाँ प्रत्येक नगर में किसी एक कार्य का विशेषीकरण देखा जा सकता है तो दूसरी तरफ भारत जैसे देश जहाँ अधिकतर नगर बहुकार्यिक विशेषता रखते हैं उनके लिए यह विधि उपयोगी नहीं है । इसी विधि का दोष यह भी है कि इसमें नगर जनसंख्या के आकार को आपेक्षित स्थान नहीं दिया गया है । नेल्सन विधि नगरों की मात्रात्मक विशेषता का आकलन कम व उनकी गुणात्मक विशेषता की व्याख्या अच्छी करती हैं, जिससे भ्रान्ति उत्पन्न हो जाती है ।

14.10.2.3 वेब विधि

वेब विधि के अनुसार किसी भी नगर के विशिष्टीकरण को मापने का अच्छा तरीका वह अनुपात है जो उस नगर के कार्य विशेष में लगे लोगों के प्रतिशत तथा वहाँ के सभी नगरों के उसी काम के माध्य-प्रतिशत के बीच में होता है । इसको प्राप्त करने के लिए उन्होंने एक सूत्र का प्रतिपादन किया । इस आधार पर ही (1959) राज्य के नगरीय केन्द्रों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है ।

वेब द्वारा प्रस्तुत यह विधि विभिन्न कृत नगरों व अन्तर्नगरीय तुलना करने के लिए उपयुक्त नहीं है ।

14.10.2.4 बहुचरीय विश्लेषण विधि (Multi -Variate analysis method)

इस विधि के अन्तर्गत बहुत से परिवर्तनशील चरों का सांख्यिकीय विधि से विश्लेषण किया जाता है । इसके द्वारा नगरों का कार्यात्मक, आर्थिक, सामाजिक तथा जनांकिकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकृत कर लिया जाता है । 1961 में मोसर तथा स्कॉट का योगदान मुख्य रहा है । आपने जनसंख्या का आकार, उसकी संरचना परिवर्तन, आर्थिक विशेषता, सामाजिक वर्ग, स्वास्थ्य शिक्षा, मतदान की विशेषताऐं जैसे 57 चरों के आधार पर ब्रिटिश नगरों का सामाजिक तथा आर्थिक विविधताओं का मात्रात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । बहुचरीय विश्लेषण की सबसे अधिक लोकप्रियता विधि गणक विश्लेषण को बताया गया है, इसके अन्तर्गत घटकों का सांख्यिकीय विश्लेषण होता है ।

उपर्युक्त बहुचरीय विश्लेषण को आधार मानकर मोसर स्काट ब्रिटिश नगरों (1961), काजी अहमद द्वारा भारतीय नगरों (1965), किंग द्वारा (1966), कनाडा के नगरों तथा हैरिस 1970 द्वारा सोवियत नगरों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है ।

14.11 भारत में नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण

नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण में भारतीय विद्वानों ने नेल्सन की विधि का उपयोग सर्वाधिक किया है । इस दिशा में सबसे पहला प्रयास 1954 में जानकी ने किया । उन्होंने केरल के नगरों को पांच मुख्य वर्गों में बांटा । काशीनाथ सिंह ने 1959 में उत्तर प्रदेश के नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया । यह नेल्सन की विधि पर आधारित कर किया गया था । इसी तरह प्रकाश राव ने अपना वर्गीकरण न्यूनतम वर्ग रेखिक समाश्रयण विधि द्वारा पेश किया

Scanned with CamScanner

। इसी क्रम में गांगुली (1965) ने नेल्सन विधि को आधार मानते हुए नगरों का कार्यातमक वर्गीकरण दिया । काजी अहमद ने 1965 में कार्यात्मक विशेषताओं के विश्लेषण के लिए बहुचरीय विधि का प्रयोग किया । 1966 में एन.पी. सक्सेना, ओम प्रकाश सिंह, ओंकार सिंह (1969) पी. एस तिवारी (1968), 1976 में सिंह व साहबदीन के कार्य उल्लेखनीय रहे हैं ।

14.12 नगरों के कार्यात्मक समूह (Functional Grouping of Towns)

ऊपर दिये गये विवरण को आधार मानते हुए व्यावसायिक तथा कार्यात्मक विशेषताओं को ध्यान रखते हुए नगरों को निम्न प्रकार्यात्मक वर्गों में रखा जा सकता है - (मानचित्र - 3)

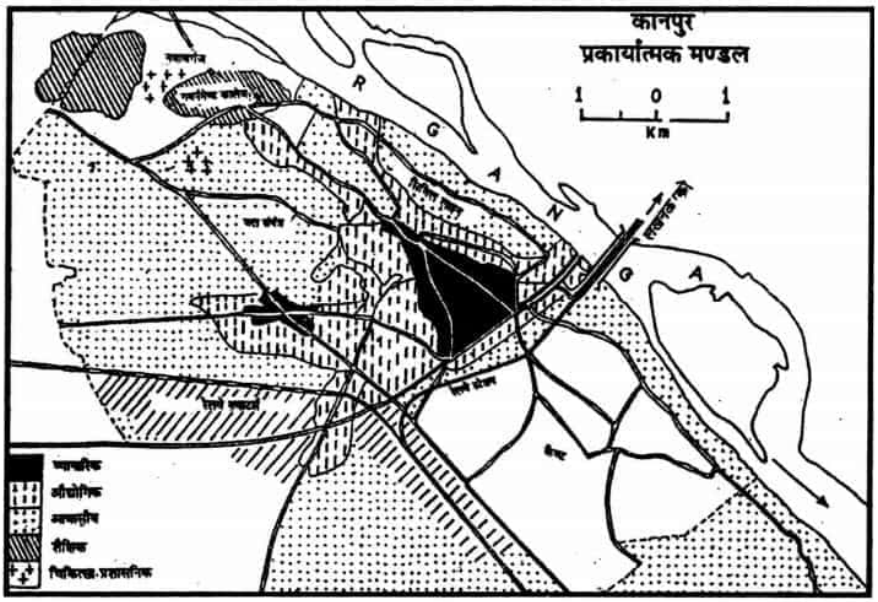

मानचित्र 14.3 कानपुर का प्रकार्यात्मक मण्डल

1. उत्पादन केन्द्र
2. व्यापार व वाणिज्य केन्द्र
3. प्रशासनिक केन्द्र
4. सांस्कृतिक केन्द्र
5. परिवहन तथा संचार केन्द्र
6. पर्यटन व मनोरंजन केन्द्र
7. सैन्य अथवा सुरक्षा केन्द्र
8. मिश्रित केन्द्र

14.12.1 उत्पादन केन्द्र

इस आधार पर नगरों को दो भागों में रखा जा सकता है (a) प्राथमिक उत्पादन केन्द्र, और (b) औद्योगिक उत्पादन केन्द्र । प्राथमिक उत्पादन केन्द्र के अन्तर्गत वे उत्पादन सम्मिलित हैं जो

Scanned with CamScanner

कि प्रकृति प्रदत्त होते हैं । इस प्रकार के केन्द्रों में नगर जनसंख्या प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण कार्य में लगी होती है । इसके अन्तर्गत खनन, लकड़ी काटना, तेल उत्पादन, मछली पकड़ना आदि से सम्बन्ध रखने वाले नगरों को शामिल किया जाता है ।

औद्योगिक उत्पादन नगरों में कच्चे माल का उपयोग परिष्कृत करने का कार्य मशीनों की मदद से कर उसकी कीमत में वृद्धि कर ली जाती है जैसे लौह -अयस्क से स्पात, चूना पत्थर से सीमेन्ट, गन्ने से चीनी, बॉक्साइट से एल्यूमिनियम आदि । इस प्रकार के नगर यातायात तथा संचार के साधनों के माध्यम कच्चे माल के स्रोत तथा बाजारों से जुड़े रहते हैं । इस प्रकार के नगर कभी -कभी, किसी उद्योग विशेष या उद्योगों के समूह द्वारा जाने जाते हैं जैसे जमशेदपुर, भद्रावती, भिलाई, बरौनी, बरमिंघम, ओसाका, नागासाकी, शंघाई का महत्व औद्योगिक नगर के रूप में स्थापित है ।

14.12.2 व्यापार वाणिज्य केन्द्र

व्यापार नगर में वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विनिमय, संग्रह आदि कार्य सम्पादित किये जाते हैं । रसल स्मिथ ने इस प्रकार के नगरों के विकास की दो अवस्थायें दी हैं (A) ये नगर स्थानीय क्षेत्रों के उपयोग आने वाली वस्तुओं का विनिमय तथा संग्रह करते हैं (B) ये नगर राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए मध्य स्थिति के रूप में कार्य करते हैं इन्हें बन्दरगाह कहा जाता है, यहाँ से निर्यात आसान होता है ।

14.12.3 प्रशासनिक केन्द्र

औद्योगिक क्रान्ति से भी पहले सभी बड़े नगर प्रशासनिक नगर होते थे । यहाँ प्रशासनिक कार्य व व्यापारिक कार्य भी विकसित हो जाते थे लेकिन अब यह सुविधा विश्व के चुनिंदा नगरों के पास ही है । इनकी परिवहन की दृष्टि से स्थिति अनुकूलतम है । ये नगर राजनीति के भी केन्द्र होते हैं । प्रशासन के केन्द्र होने के कारण सर्वोच्च पद प्राप्त सरकारी अफसरों, शीर्षस्थ राजनयिकों आदि का निवास स्थान होता है । इन नगरों को साफ सुथरा व सुनियोजित रखा जाता है प्राचीन समय के प्रशासनिक नगर किले के नगर अथवा गढ़ होते थे, इस प्रकार के नगरों के चारों तरफ दीवार या गहरी खाई हुआ करती थी जैसे उदयपुर, जोधपुर, चित्तौड़ आदि । वर्तमान के प्रमुख प्रशासनिक नगर, दिल्ली, वाशिंगटन, मास्को, केनबरा, इस्लामाबाद मुख्य हैं।

14.12.4 सांस्कृतिक केन्द्र

इस प्रकार के नगरों में धार्मिक तथा शैक्षणिक कार्यो की प्रधानता पायी जाती है । यहाँ विश्वविद्यालय, कॉलेज, मंदिर, गिरजाघर, मस्जिद आदि स्थापित होते है । इस प्रकार के नगरों की संख्या कम होती है तथा इनका आकार छोटा ही होता है । जैसे हीरद्वार, मथुरा, पुरी, उज्जैन, मक्का, जेरुशलेम, वेटिकन सिटी आदि नगर व शैक्षणिक दृष्टि से आक्सफोर्ड, इलाहबाद, कैम्ब्रिज, हारवर्ड, रुड़की, पिलानी, अलीगढ़ नगर सम्मिलित हैं ।

Scanned with CamScanner

14.12.5 परिवहन व संचार के केन्द्र

ये नगर उन स्थानों पर विकसित होते है जहाँ परिवहन मार्गो का मिलन स्थल हो अथवा परिवहन के माध्यम में परिवर्तन होता हो जैसे रेलमार्ग की समाप्ति और सड़क मार्ग का प्रारम्भ उदाहरणार्थ ऋषिकेश, कोटद्वारा, जम्मू काठगोदाम आदि । दूसरा समुद्र मार्ग समाप्त हो व स्थल मार्ग प्रारम्भ हो जैसे मुम्बई, कलकत्ता, चेन्नई, विशाखपट्नम् लंदन, संघाई आदि । जिस स्थान पर आन्तरिक जलमार्ग समाप्त होता हो व थलमार्ग का प्रारम्भ हो जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका का महान् झील के तट पर विकसित नगर आदि । (मानचित्र 14. 4 महान सुरक्षात्मक कार्य सहित बीजिंग एक प्रमुख मार्ग केन्द्र)

14.12.6 पर्यटन व मनोरंजन केन्द्र

इन नगरों में मनोरंजन व पर्यटन की सुविधाऐं उपलब्ध होती है । इन नगरों का चयन तथा विकास स्वास्थ्य वर्द्धक जलवायु, प्राकृतिक दृश्यों, क्रीड़ा जैसी सुविधाओं का पूरा ध्यान रखते हुए किया जाता हैं । यहाँ अच्छे होटल, बैंक, परिवहन कार्यालय आदि पाये जाते हैं । पर्यटकों के कारण यहाँ के निवासियों की आय का प्रमुख स्त्रोत होता है, जैसे आबू पर्वत, शिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग इस प्रकार के नगर हैं ।

14.12.7 सैन्य अथवा सुरक्षा केन्द्र

मध्यकाल में सुरक्षा की दृष्टि से दुर्ग का निर्माण किया जाता था । इनकी स्थापना मूलतः प्रशासनिक कारणों से की जाती थी लेकिन समय के साथ ये समीपस्थ निवासियों को आक्रमण से सुरक्षा देना व चौकियों के रूप में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया । इसका अच्छा उदाहरण रोम काल में स्थापित नगर वर्तमान में भी बहुत से नगरों का विकास सैनिक तथा सुरक्षा केन्द्रों के रूप में किया जाता है । ये नगर वायु सेना, नौसेना, स्थल सेना के मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित किये गये हैं, जैसे डिगोगार्सिया (उ. हिन्द महासागार में) व जोधपुर (भारत म)ई वायुसेना के मुख्य केन्द्र के रूप में हैं ।

14.12.8 मिश्रित नगर

कुछ नगर ऐसे होते हैं जो किसी एक नगरीय कार्य में विशिष्टीकरण न प्राप्त कर बहुत से नगरीय कार्यो को सम्पन्न करते हैं । यहाँ कार्यों का इतना मिलाजुला रूप देखने को मिलता हैं कि उस नगर के प्रधान कार्य का पता लगाना असम्भव हो जाता है । इसमें मेरठ, सहारनपुर, कलकत्ता, बंगलौर आदि नगर सम्मिलित हैं ।

उपर्युक्त के अतिरिक्त भी नगरीय कार्यों के अनेक लघु वर्ग हैं जिनमें चिकित्सालय नगर जैसे वेलौर (भारत), आरोग्य केन्द्र मुआली (भारत) उष्ण निर्झर नगर सीताकुंड (मुंगेर भारत) आदि ।

14.13 सारांश (Summary)

नगरों का विकास पुराना है, इसके प्रमाण सिन्धु घाटी सभ्यता के नगर व बेबीलोन में मिलते हैं । ग्रामीण क्षेत्रों के नगरीय क्षेत्र मे बदलने की प्रक्रिया का नाम ही नगरीकरण है । जिस देश मे

Scanned with CamScanner

औद्योगिक व आर्थिक विकास जितनी गति तीव्र होती है उन देशों में नगरीकरण भी उतना ही द्रुत गति से होता है । स्पष्ट है कि नगरीकरण की प्रक्रिया अत्यन्त पुरानी है । इसका उद्भव लगभग 10, 000 वर्ष पूर्व प्रागैतिहासिक काल में हुआ था ।

नगरीकरण की प्रक्रिया के बहुत से कारक हैं जैसे कृषि में यंत्रीकरण, उद्योगों की स्थापना, प्रशासनिक इकाइयों की स्थापना, परिवहन मार्ग, सांस्कृतिक केन्द्र इत्यादि ।

नगरीकरण के परिणाम वरदानस्वरूप तथा विनाशकारी दोनों ही तरह के हो सकते हैं । लाभकारी परिणामों में औद्योगिक प्रगति, शिक्षा में प्रगति, कृषि पर निर्भरता में कमी तथा यातायात के साधनों का विकास मुख्य है । विनाशकारी परिणामों में स्थान समस्या, आवास समस्या, पर्यावरण समस्या, परिवहन की समस्या, जलापूर्ति की समस्या मुख्य हैं ।

नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरण के द्वारा हम उनकी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति ज्ञात कर सकते हैं । यह वर्गीकरण गुणात्मक व परिमाणात्मक विधियों के द्वारा किया जा सकता है । इसी आधार पर नगरों को प्रकार्यात्मक वर्गों में रखा गया है ।

बोध प्रश्न - 1

1. नगरीकरण क्या है?

   .....

   .....

2. नगरीकरण के प्रमाण कौन सी दो सभ्यताओं में मिले हैं?

   .....

   .....

3. नगरीकरण से जुड़ी तीन अवधारणाएँ कौन सी हैं?

   .....

   .....

4. नगरीकरण के कोई दो कारक बताओ ।

   .....

   .....

5. प्रशासनिक केन्द्र अधिक जनसंख्या को आकर्षित क्यों करते हैं?

   .....

   .....

6. नगरीकरण के दो लाभकारी परिणाम लिखो ।

   .....

   .....

7. नगरीकरण के तीन विनाशकारी परिणाम बताओ ।

   .....

   .....

8. नगरीय प्रदूषण के तीन कारक लिखो ।

   .....

Scanned with CamScanner